शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
614 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

''गुरू नानक देव जी आधुनिक युग के प्रणेता''

डॉ0 अमर जीत सिंह परिहार
प्राचार्य, संकल्प इन्स्टीटयूट ऑफ एजूकेशन,
गाजियाबाद (उ0प्र0)
Email: principalsankalp@yahoo.in

सुनीता
शोध छात्रा
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

सारांश

'' गुरू नानक देव जी सिख धर्म के संस्थापक ही नहीं अपितु मानव धर्म के उत्थापक थे वे केवल किसी धर्म विशेष के गुरू नहीं अपितु सम्पूर्ण सृष्टि के जगत गुरू थे।
नानक शाह फकीर।

हिन्दू का गुरू, मुसलमान का पीर।

भाई गुरूदास जी लिखते है कि इस संसार के प्राणियों की त्राहि त्राहि को सुनकर परम पिता परमेश्वर ने इस धरती पर गुरू नानक देव जी को देव दूत के रूप पहुँचाया।

''सुनी पुकार दातार प्रभु गुरू नानक
जग महि पठाइया।।''

उनके इस धरती पर आने पर–

'' सतिगुरू नानक प्रगटिआ, मिट्टी धुंध जग चानन होआ....

जगत गुरू बाबा नानक देव जी का सर्म्पूण जीवन समाज में व्याप्त रूढि वादी परमपरओं एवं बुराइयों को दूर करने में संलिप्त रहा है। गुरू नानक देव जी का जीवन दर्शन संसारिक यथार्थ से नाता नहीं तोडा वे संसार के त्याग, सन्यास लेने के खिलाफ थे, क्योंकि वे सहज योग के हामी थे। उनका मत था कि मनुष्य सन्यास लेकर स्वयं का अथवा लोक कल्याण नहीं कर सकता जितना कि स्वाभाविक एवं सहज जीवन में इसलिए उन्होंने गृहस्थ त्याग गुफाओं में बैठने से प्रभु प्राप्ति नहीं होती अपितु गृहस्थ में रहकर मानव सेवा करना श्रेष्ठ धर्म बताया सफल गृहस्थ जीवन का मंत्र– 1–किरन करना, 2–वड़ छकना, 3– नाम जपना

प्रस्तावना

गुरू नानक देव जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व जितना सरल, सीधा ओर स्पष्ट है उसका अध्ययन और अनुसरण भी उतना ही व्यावहारिक है।

गुरू जी ने सभी धर्मो को श्रेष्ठ बताया, जरूरत है धर्म के सत्य ज्ञान को आत्म सात कर अपने व्यावहारिक जीवन में लाने की।''

आज के भारतीय समाज में उग्र साम्प्रदायिकता की आँधी चल रही है। धर्म के नाम पर घृणा, द्वेश, और उन्माद का प्रचार–प्रसार हो रहा है। जाति–भेद, खूँखार जाति–युद्ध बन रहा है। तरह–तरह के दुराग्रहों, कट्टरताओं और संकीर्णताओं का बोलबाला है। यह सब देखकर मन में कई सवाल उठते हैं। क्या हम उसी समाज में हैं जिसमें कभी गुरू नानक देव जी पैदा हुए थे? क्या हम भारतीय समाज के उत्तर गुरू नानक देव जी युग में जी रहे हैं? ऐसे समय में गुरू नानक देव जी को याद करना स्वाभाविक है और जरूरी भी है।

जगतगुरू बाबा गुरू नानक देव जी इस भारत भूमि में सत्य पुरुष के रूप में अवतरित हुए जिन्होंने अज्ञान के अंधकार में भटके हुए मानव को ज्ञान का प्रकाश दिखाकर सन्मार्ग दिया। ऊँच–नीच, छुआछूत, की क्षुद्र भावना को मिटाकर, सबके हृदयों में समता का बीजारोपण किया। जाति–पात, घर–परिवार आदि के अभिमान को त्याग कर सद्गुणों एवं सदाचार को महत्व दिया। धर्मान्धता, अंधविश्वास, मिथ्या, मान–मनौती, पाखण्ड एवं कुरीतियों का निर्भीकता से जोरदार शब्दों में खण्डन किया। धार्मिक–क्रान्ति का बिगुल बजाकर, सबको शुद्ध चेतना तथा सत्य–शाश्वत आत्मज्ञान का सदुपदेश देकर मानवता के धर्म को मुखरित किया। हमारे देश के इतिहास में गुरू नानक देव जी की अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न भक्ति एवं ज्ञान के विराट स्वरूप हैं। यत्र–तत्र सर्वत्र के अनुसार उनकी अमृत वाणी हर जाति, वर्ण एवं विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में देश–विदेश में समान रूप से श्रद्धाभाव से गायी जाती है।

अतः यह आवश्यक प्रतीत होता है कि गुरू नानक देव जी जैसे उच्च कोटि के चिंतक द्वारा यत्र–तत्र व्यक्त किये गये चिंतन का पता लगाया जाए तथा उनके चिंतन की वर्तमान संदर्भ में समीक्षा की जाये और देखा जाए कि उनके विचार किस सीमा तक वर्तमान समय में महत्वपूर्ण एवं तर्कसंगत है।

सामान्य दृष्टि से देखने पर यह ज्ञात होता है कि गुरू नानक देव जी का चिंतन जाति निरपेक्ष एवं धर्म निरपेक्ष है अस्तु उनके चिंतन से आधुनिक भारतीय शिक्षा को सही रूप प्रदान किया जा सकता है। इसी को षोध के माध्यम से उजागर करना है और आम लोगों तक इस बात को पहुँचाना है। वास्तव में गुरू नानक देव जी के समाज सुधार संबंधी विचार इतने उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हैं कि उन्हें भारतीय शिक्षा में समाहित कर क्रान्तिकारी परिवर्तन किये जा सकते हैं।

युगद्रष्टा संत गुरू नानक देव जी आध्यात्मिक विचारधारा के परिचालक तथा समर्थक थे। उन्होंने सदा यही प्रयास किया कि मनुष्य को परहित साधन के लिए तथा दूसरे जीवधारियों की सेवा के लिए जीवनपर्यन्त साधना में अनुरक्त रहना चाहिए। उन्होंने आध्यात्मिक एकता को सभी प्राकृतिक उपादानों में देखा था। इन्होंने युक्ति एवं अनुभव के द्वारा इस जड़ जगत तथा आत्मतत्व के एकत्व पूर्ण सम्बन्ध को प्रकट किया।

गुरू नानक देव जी की विचारधारा जीवन दर्शन है वह जीवन को प्रेरणा प्रदान करने वाली है। वह भारत की आचारपरक, आध्यात्मिक जीवन–दृष्टि तथा सांस्कृतिक परम्परा की वह अमूल्य निधि है। जो तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तित एवं संशोधित है। उनके विचार

उस परम्परा से उद्‌भूत है जो युग युगान्तर से प्रचलित महान आदर्षों, सिद्धान्तों, सत्य, त्याग, आत्मशुद्धि मानव सेवा आदि नैतिक मूल्यों को भौतिक जीवन की अपेक्षा उत्तम मानती आयी है। गुरू नानक देव जी ने सदा अपने सुख का परित्याग कर दूसरों के हित की बात सोची है। उन्होंने एक सच्चे उपदेशक और साधक के समान उपदेश दिये हैं। उन्होंने समाज की विकृतियों को पहचाना और उनके निदान में अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया था। गुरू नानक देव जी ने शिक्षा में भारतीय आदर्श को देखा था। उनके अनुसार शिक्षा का अभिप्राय केवल आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है और न ही उसका अर्थ मृत्यु के बाद मुक्ति से है। ज्ञान के अंतर्गत मानव जाति के लिए काम आने वाले सभी ज्ञान और प्रशिक्षण है। मुक्ति का अर्थ वर्तमान जीवन ता से मुक्ति है। व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को विकसित करना शिक्षा है। यह वह साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति पूर्ण मानव के रूप में विकसित होता है। शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति की निजी एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। गुरूनानक देव जी ने परनिन्दा के घोर विरोधी थे। उनके अनुसार– हम नहीं चंगे, बुरा नहीं कोई।

गुरू नानक देव जी ने गुरु को बहुत ही ऊँचा और सम्माननीय स्थान प्रदान किया है। उन्होंने शिष्य का सच्चा पथ प्रदर्शक गुरु को ही बताया है। अगर शिष्य को अच्छा बनाना है तो उसके पहले गुरु को अच्छा बनाना होगा। अगर गुरु शिष्य को बुरे मार्ग पर जाने से रोकता है तो गुरु को भी वैसा ही करना होगा। पुस्तक पाठ ज्ञान का समानार्थी है। गुरू नानक देव जी इस वाद विवाद के विरोधी थे जो पुस्तक पाठ वाद–विवाद को जन्म दे वे ऐसे पुस्तक पाठ को कोई महत्व नहीं देते थे। गुरू नानक देव जी चाहते थे कि सभी को ज्ञान प्राप्त हो लेकिन पुस्तक पाठ से नहीं उनकी स्वयं की अभिव्यक्ति हो।

गुरू नानक देव जी के अनुसार शिक्षित व्यक्ति के हृदय में दया, प्रेम, ममता तथा संवेदनशीलता भलीभांति होनी चाहिए नहीं तो उसका समस्त ज्ञान झूठा है। गुरू नानक देव जी का ब्रह्म कोई वस्तु या व्यक्ति नहीं है। वह एक परिवर्तित मनोदशा है। इस सम्बन्ध में उनके विचार इस प्रकार है –

गुरू नानक देव जी की नैतिक शिक्षा मनुष्य के व्यवहार और आचरण से ही सम्बन्धित ही नहीं है, अपितु वाणी और मानसिक आचरण से भी सम्बन्धित है। गुरू नानक देव जी जानते थे कि समाज में भावात्मक एकता की प्रतिष्ठा नहीं होती। इसलिए उन्होंने मन और आचरण से सम्बन्धित उपदेश दिये। गुरू नानक देव जी एक सुधारक, संत एवं भक्त सभी कुछ एक साथ थे। उन्होंने समाज में चली आ रही अनेक परम्पराओं को नया रूप देने में क्रान्तिकारी कार्य किया। उनका जीवन दर्शन एक क्रान्तियोगी का था, महिलाओं के प्रति उनका दृष्टि कोण सकारात्मक था। उनके अनुसार–

सो क्यों मंदा आंखिए, जित जन्मे राजान।।

गुरू नानक देव जी ने जाति भेद का डटकर विरोध किया उनके अनुसार जिस प्रकार मदिरा से भरा हुआ सोने का कलश शोभायमान नहीं होता है उसी प्रकार नीच कर्म करने वाला ब्राह्मण भी निन्दनीय होता है।

गुरू नानक देव जी ने अपने अनुभव की आंखों से जीवन के मूल को बड़ी सावधानी से देखा था और व्यर्थ समझकर जाति पांति के ढकोसलों को एकदम छिन्न–भिन्न करने का प्रण कर लिया था। उनके सिद्धान्तों का समाज से गहन सम्बन्ध है। वे किताबी सिद्धान्तों का आदर उस समय तक नहीं करते थे जब तक कि वे अनुभव की कसौटी पर खरे न उतर जायें। उन्होंने कागजी लेख को अनुभव से परास्त किया था। उनके व्यक्तिगत अनुभवो के अनुसार –

लख आकाशां अकांश, लख पातालां पताल।

गुरू नानक देव जी अर्थ सम्बन्धी व्यवस्था के प्रतिपादन में स्पष्ट दर्शी हैं, उनका जीवनादर्श है अनेकत्व में एकत्व की स्थापना। उन्होंने धन संचय को पाप कहा है, अधर्म कहा है उनका आदर्श तो 'संत न बांधे गाठरी' का है। उनका निश्चित मत है कि समाज में प्रत्येक प्राणी को अपरिग्रह अंग की साधना करनी चाहिए। शरीर–श्रम द्वारा उत्पादन करना, सादा जीवन व्यतीत करना, उनके अनुसार उपयुक्त है।

गुरू नानक देव जी ने ऐसी शासन पद्धति की चर्चा की है जो अहिंसा विशुद्ध प्रेम, सेवा भाव के आधार पर स्थित हो। राजा और प्रजा का सम्बन्ध सेव्य और सेवा का होना चाहिए। राजा सदैव प्रजा का कल्याण करने वाला होना चाहिए। उन्होंने अनेक बार यह बात कही है कि राजा–प्रजा, धनी–निर्धन, जय–पराजय, शब्दों की यह जोड़ी समाप्त की जानी चाहिए। सभी भेद–भावों का उन्मूलन करना चाहिए और सबको समान रूप में समानता के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिए। गुरू नानक देव जी अहिंसक समतावाद के समर्थक थे। मानव समाज अपने व्यवहार में आत्मसंयमी तथा आत्मानुशासित होकर सर्वोच्च पवित्रता को अंगीकार कर सभी प्राणियों के साथ समदर्शितापूर्ण व्यवहार करे और सबकों अपने समान ही समझे, यही स्थिति शुद्ध स्थिति है। आत्मा का स्वरूप है मुक्त शुद्ध बुद्ध। मनुष्य उस अमूर्त का मूर्त रूप है। फलतः उसका स्वभाव भी शुद्ध बुद्ध और मुक्त स्वतंत्र ही होना चाहिएं इस स्वभाव की सिद्धि के लिए किसी भी प्रकार का बंधन दबाव पराधीनता गुरू नानक देव जी को मान्य नहीं।

गुरू नानक देव जी ने बंधन को ही दुःख का मूल बताया है। मोह, माया, मद, मत्सर, क्रोध, लोभ आदि ये सब बंधन हैं जिनमें फंसकर ही मनुष्य अपनी सुध–बुध भूल जाता है। इन दूषणों को आत्मसंयम एवं आत्मसाधना के द्वारा दूर किया जा सकता है और इसी प्रकार बाह्य दबाव एवं राज्य शासन का दबाव भी दूर किया जा सकता है। यदि समाज अहिंसात्मक, आत्मसंयमी, आत्मानुशासित तथा आत्म त्यागी हो जाय तो किसी भी शासन सत्ता की आवश्यकता नहीं होगी। समाज का प्रत्येक सदस्य इतना महान और सदाचरणशील हो जायेगा कि वह सभी नियमों का किसी भी भय या दबाव के बिना ही पालन करेगा और लोक कल्याणार्थ कार्य करता हुआ जीवन व्यतीत करेगा।

गुरू नानक देव जी के विचारों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनके विचार अलौकिक प्रतिभासम्पन्न एवं समस्त जीवन में प्रयोग किये गये सत्य के आधार पर निर्धारित हैं। इनके विचारों का सत्यनिष्ठ एवं स्वानुभूतिपरक होना इनकी विशिष्टता है। विचारों में कथनी एवं करनी का सामंजस्य है। मन के विचार, सुधारवाणी और कर्म का सामंजस्य होना

इन विचारों का अनिवार्य तत्व है। उनके विचारों का केन्द्र मूलतत्व अथवा चरम सत्य है। वही जीवन का परम ध्येय है और उसका साक्षात्कार करना जीवनादर्श है।

गुरू नानक देव जी के अनुसार सारे धर्मों का मूलतत्व एक ही है। समाज में व्याप्त रूढ़ियों के अन्तर्गत बाहरी आचार विचारों के लिए उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों दोनों की आलोचना की।

विश्व चिन्तन एवं जीवन को प्रभावित करने वाली भारतीय चिन्तन धारा में गुरू नानक देव जी का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। उनकी विचारधारा में दार्शनिक, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन क्षेत्रों को मुख्यतः प्रभावित किया और उन्हें नवीन दृष्टिकोण एवं जीवन दर्शन प्रदान किया। इसी कारण विश्व की महानतम विभूतियों में गुरू नानक देव जी का महतवपूर्ण स्थान है तथा उन्हें महात्मा योग्य प्रतिष्ठा एवं गौरव प्राप्त है।

गुरू नानक देव जी के आध्यात्मिक विचारों का निष्कर्ष है सम्पूर्ण विश्व की अखण्ड आध्यात्मिक एकता को सुसम्पन्न दशा में सुचारू रूपेण सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित रूप में संगठित किये रहना और सर्वहिताय तथा सर्वसुखाय के हेतु निष्काम सेवा में रत् रहकर नरहरि दर्शन द्वारा परमानन्द की प्राप्ति करना चिर सुख एवं शान्ति का अनुभव करना है। इस चिर शान्ति की प्राप्ति के लिए साधना मार्ग का अनुगमन करना अनिवार्य है। बिना साधना के आत्मैक्य अनुभूति असम्भव है।

गुरू नानक देव जी ने कहा कि साम्प्रदायिक विचारों के आधार पर भी समाज में विभेद–बुद्धि का प्रसार हो जाया करता है। हिन्दू–मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी, यहूदी, अस्पृश्य आदि अनेक जातियों के पारस्परिक व्यवहार में भिन्नता रहती है और उसी के कारण पारस्परिक वैमनस्य द्वेष, घृणा, ईष्या, आदि दूषणों का प्रचार हो जाता है और आपसी अविश्वासों को लेकर साम्प्रदायिक झगड़े हो जाया करते हैं। विचारों में भिन्नता के कारण आध्यात्मिक चरम सत्य को भूल जाना उचित नहीं। आत्मतत्व सभी में व्याप्त है और इसीलिए सब परस्पर भाई–भाई है और सबको एक दूसरे के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अतः हम कह सकते हैं कि धर्म निरपेक्ष राज्य में एक धर्म निरपेक्ष चिन्तक के अनुसार शिक्षा व्यवस्था लागू की जाय तो निश्चित रूप से भारत की जनता को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व को ग्राह्य होगी।

गुरू नानक देव जी ऐसे विचारक हैं जिन्होंने ने धर्म निरपेक्षता की नींव रखी। इन्होंने धर्म को खराब नहीं बताया बल्कि धर्म संकीर्णता को खराब बताया। धर्म संकीर्णता के कारण ही युद्ध होते हैं। वास्तव में इनके विचारों को आत्मसात् किया जाए तो युद्ध की विभीषिका, आपसी मतभेद समाप्त होंगे और निश्चित रूप से विश्व बन्धुत्व की भावना विकसित होगी। गुरूनानक देव जी धर्मनिर्पेक्षता के सजीव उदाहरण है। उन्होंने अपने जीवन काल में सदैव एक हिन्दू शिष्य (भाई बाला) एवं एक मुस्लिम शिष्य (भाई मरदाना) को साथ–साथ रखा ।

जगत गुरू बाबा नानक देव जी के सम्पूर्ण चिन्तन की विवेचना के फलस्वरूप शिक्षा का अर्थ, आदर्श एवं उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, अनुशासन, पाठशाला, गुरु–शिष्य संबंध

आदि के बारे में इन्होंने जो तर्क एवं मत दिये हैं वह निष्चित रूप से वर्तमान शिक्षा की दिशा एवं दशा सुधारने में सहायक सिद्ध होंगे। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि गुरू नानक देव जी ने जो विचार व्यक्त किए हैं वे भारतीय शिक्षा के सुधार में मील का पत्थर साबित होंगे और इसके लिए सदैव स्मरण किये जायेंगे।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र : *कबीर मीमांसा,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007

2 कुमार, सुधीन्द : *हिन्दी साहित्य का इतिहास परिप्रेक्ष्य और प्रवृत्तियां*

3 चतुर्वेदी परशुराम : *हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास,* चतुर्थ मार्ग, भक्तिकाल (निर्गुण भक्ति) काशी नागरी प्रचारणी सभा, सं0 2025 वि0

4 लाल, डॉ0 रमन बिहारी : *विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक* आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2012

5 पाण्डेय, डॉ0 रामशकल : *विश्व के महान शिक्षाशास्त्री* विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2009